(९) अब विषयों में नाहि रमेंगे...

अब विषयों में नाहिं रमेंगे, चिदानन्द पान करेंगे;
चहुँ गतियों में नाहिं भ्रमेंगे, निजानन्द धाम रहेंगे॥

मैं नहिं तन का तन नहिं मेरा चेतनभाव में मेरा बसेरा;
अब भेद-विज्ञान करेंगे, निजानन्द धाम रहेंगे॥

विषयों का रस विष का प्याला, चेतन का आनन्द निराला;
अब ज्ञान में ज्ञान लखेंगे, निजानन्द का पान करेंगे॥

ज्ञान बसे ज्ञायक में मेरा ज्ञायक में ही ज्ञान बसेरा;
अब क्षायिक श्रेणी चढ़ेंगे, निजानन्द पान करेंगे॥